

आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन के मीडिया स्टूडियो में हुई मूक प्रोडक्शन की शूटिंग

मूक निर्माण में एआई टूल्स के उपयोग का भी दिया गया प्रशिक्षण

पटना, 28 मार्च, 2025. कैमरे के सामने खड़े होकर बोलना और कैमरे के लेंस के जरिए अपने विद्यार्थियों से बात करने के लिए पूर्वनियोजित योजना और सतत अभ्यास की आवश्यकता होती है। ठोस कार्ययोजना और सतत अभ्यास से कोई भी शिक्षक मूक प्रोडक्शन कर सकता है। आर्यभट्ट ज्ञान



विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन में चल रहे मूक प्रोडक्शन पर आधारित गुरु दक्षता कार्यक्रम के चौथे दिन यह चर्चा हुई। आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय के अकादमिक एवं प्रशासनिक विकास केंद्र द्वारा आयोजित गुरु दक्षता कार्यक्रम के चौथे दिन भी मूक यानी मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्स तैयार करने का प्रशिक्षण जारी रहा। इस दौरान प्रशिक्षु शिक्षकों ने आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय के मीडिया लैब में मूक प्रोडक्शन की शूटिंग का अभ्यास किया।

इस एफडीपी का आयोजन आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. डॉ. शरद कुमार यादव की प्रेरणा से किया जा रहा है। पहले सत्र का शुभारंभ एफडीपी संयोजक, एआईयू-एकेयू-एएडीसी की कोआर्डिनेटर तथा स्कूल ऑफ जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन की प्रभारी डॉ मनीषा प्रकाश ने अतिथियों और प्रतिभागियों का स्वागत करके किया। उन्होंने कहा कि आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय और भारतीय विश्वविद्यालय संघ के सहयोग से संचालित अकादमिक एवं प्रशासनिक विकास केंद्र शिक्षकों की मूक निर्माण संबंधी समस्याओं के समाधान के लिए सदैव प्रयास करता रहेगा। मौजूदा एफडीपी के समापन के बाद भी जो प्रतिभागी मूक प्रोडक्शन करना चाहते हैं, उनके विकास के लिए आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय का स्कूल ऑफ जर्नलिज्म हमेशा सहयोग के लिए तैयार रहेगा।

इसके लिए संस्थागत रूप से संभावित समझौते भी किए जाएंगे। मुख्य वक्ता और प्रशिक्षक केके राँय ने तकनीकी का प्रयोग करते हुए विद्यार्थियों की रुचि के अनुसार कंटेंट बनाने के लिए एआई के प्रयोग के बारे में बताया। इसके बाद का सत्र हाइब्रिड माध्यम से आयोजित किया गया | ऑनलाइन माध्यम से जुड़े



यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विश्वविद्यालय प्रोफेसर ऑफ प्रैक्टिस श्री गणेश लोखंडे ने प्रतिभागियों को स्क्रिप्ट राइटिंग के विषय में बताया। इस सत्र में प्रतिभागियों ने कई सवाल पूछे जिसका वक्ताओं ने जवाब दिए। इस दौरान संवाद के लिए की गई इंटरैक्टिव तकनीकी व्यवस्था के लिए वक्ताओं ने आयोजकों को बधाई भी दी।

मुख्य वक्ता एवं प्रशिक्षक श्री केके राँय ने कहा कि शिक्षकों को सभी प्रकार के ऑनलाइन संसाधनों का उपयोग करना चाहिए। उन्होंने नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी ऑफ इंडिया, ओईआर, ईपीजी पाठशाला आदि कई स्रोत बताए। एलबीडी यानी लर्निंग डायलॉग में रचनात्मक और क्रियात्मक फीडबैक होना बहुत जरूरी है। उन्होंने यह भी कहा कि विद्यार्थियों का मूल्यांकन करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि कक्षा में पढ़ाते समय किस प्रकार की तकनीक और शिक्षण प्रणाली उपयोग में लाई जा रही है।



भोजनावकाश के बाद के सत्र में प्रतिभागियों ने दो दिन तक हुई चर्चा के अनुसार तैयार की गई प्रस्तावित मूक प्रोडक्शन की संभावित रूपरेखा को कैमरे के सामने रिकार्ड भी किया। डॉ. मनीषा प्रकाश, श्री केके राँय तथा एफडीपी के सहसंयोजक डॉ संदीप कुमार दुबे के निर्देशन और मार्गदर्शन में प्रतिभागियों ने

वीडियो रिकार्डिंग की। इस दौरान प्रतिभागियों को कंटेंट की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण सुझाव दिए गए। प्रतिभागियों में वीडियो कंटेंट बनाने को लेकर विशेष उत्साह नजर आया। सभी प्रतिभागियों ने वीडियो शूटिंग के लिए मीडिया लैब में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। 25 मार्च से आयोजित इस कार्यक्रम में मूक प्रोडक्शन में दक्ष शिक्षाविदों और प्रोफेशनल्स द्वारा पांच दिनों तक मूक प्रोडक्शन की ट्रेनिंग दी जा रही है। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम भारतीय विश्वविद्यालय संघ तथा आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय के द्वारा स्थापित अकादमिक एवं प्रशासनिक विकास केंद्र और स्कूल ऑफ जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन की ओर से आयोजित किया जा रहा है। इस एफडीपी में उत्तर प्रदेश, झारखंड, बिहार आदि के कई विश्वविद्यालयों, शैक्षिक संस्थानों और महाविद्यालयों के शिक्षक प्रतिभाग कर रहे हैं।